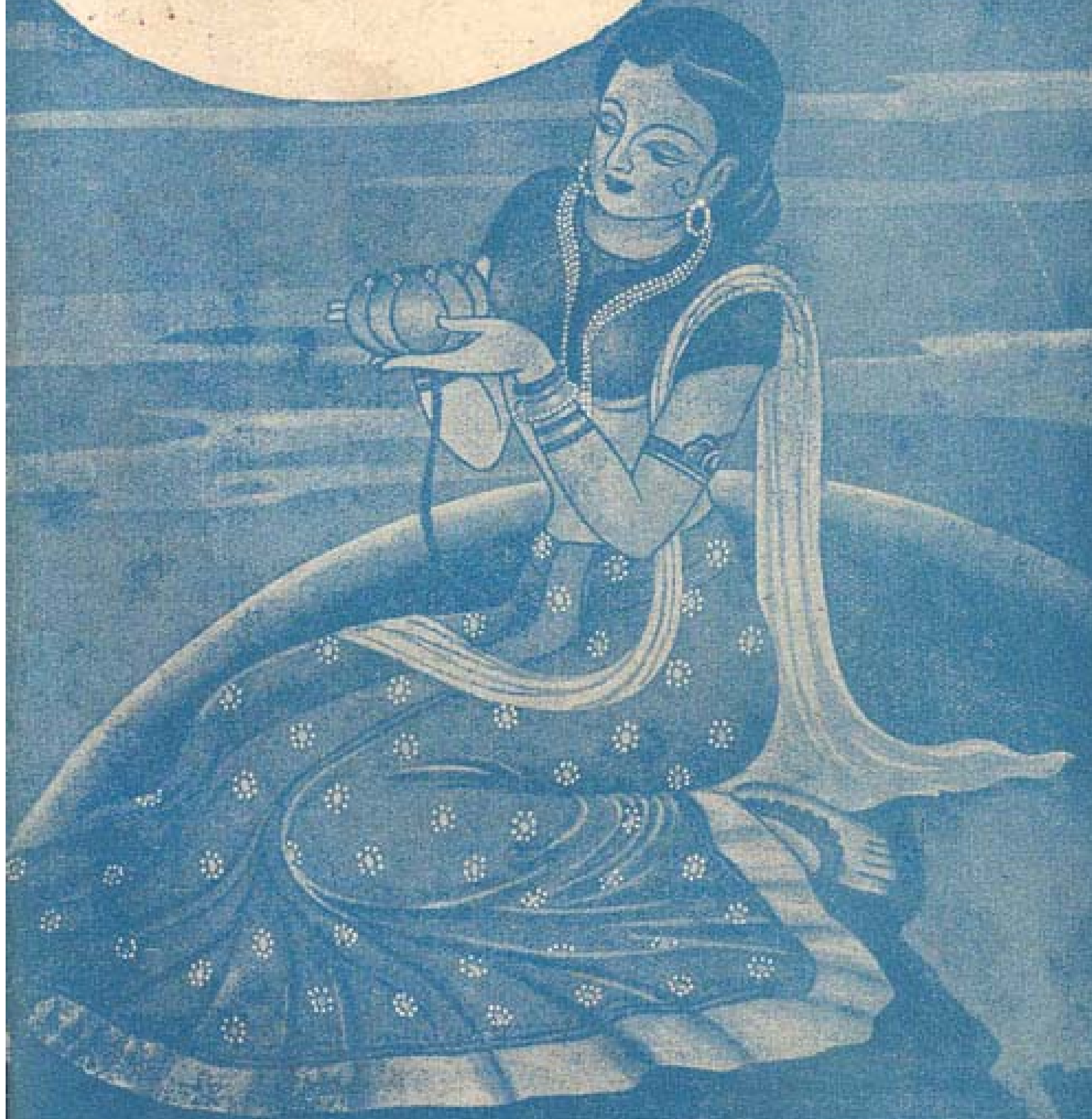
চয়নিকা

(প্রথম প্রস্থন)



प्रकाशक

मिथिला-दर्शन समिति

मैथिल संघ, कलकत्ता

मुद्रक

प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह, एम० ए०

सिंह प्रेस

१६ बी०, नरेन्द्र सेन स्क्वायर

कलकत्ता-६

सूचीपत्र

मूल्य चारि आना

ग्रेजुएट पुतोहु



[प्रो० श्रीयुत् हरिमोहन झा, एम० ए०]

पंडित काका क आङ्गन में आइ बी० ए० पास कनियाँ आबि रहल छथिन्ह। ई सुनितहिं सौंसे गाम मे कुतूहलक बाढ़ि आबि गेल। खिगणक देह मे गुदगुदी लागय लगलैन्ह। पंडितांइन क करेज भालरिक पात जकाँ काँपय लगलैन्ह। आइ काल्हि ए० बी० पढ़यवाली कनियाँ क शान मे जुमब कठिन। बी० ए० वाली कें के डेबि सकैत अछि! बड़की पुतोहु के पुछलैन्ह—ए तुनुकरानी! अङ्गरेजी वाली कनियाँ कें एहि घर मे नीक लगतैन्ह? हुनका कुर्सी पर बैसि कए अखबार पढ़बाक हिस्सक हेतैन्ह। एहि ठाम हमर सभक संग चिनवार नीपल पार लगतैन्ह?

मुजौनावाली तुलसीचौरा पर दीप लेसैत बजलीह—एतबा डर छलैन्ह त अङ्गरेजीवाली क सौखे कियेक भेलैन्ह? कोनो हमरे सभ सन हरही सुरही आबितैन्ह त भरि दिन खटैत रहितैन्ह।

सासु गंभीर होइत कहलथिन्ह—ऐ कनियाँ! भावी पर ककरो सक चलै छैक? नहिं त ओहन ओहन धनीक जमींदारक बेटी कें छोड़ि श्रीकान्त ओहि मास्टरनीक बेटिये पर कियेक ढुलि गेलाह? बिनु दामे ओकरा हाथ बिका गेलाह? नहिं जानि छौंड़ीक देह मे कोन गुण भरल छैक!

सुमित्रा मिडिल मे पढ़ैत छलि। माइक बात सुनि बाजलि —तों सभ ओकरा देहक गुण की बुझबहीक?

मुजौनावाली कहलथिन्ह—स्कुलिया लड़की क देह कि दोसर भऽ जाइ छैक? ओकर चाम बदलि जाइ छैक?

सुमित्रा बजलीह—बदलि त जैबे करइ छैक। पंडिताइन कहलथिन्ह—बेसी लुब लुब नहि कर। तोंहू पढ़य लगलैंह अछि। ला त अपन देह। ओहि मे चुट्टी काटि कऽ देखैत छिऔक।

एतबहि मे मोटर क आवाज सुनाइ पड़ल। तीनू जनी दुरुखा दिस दौड़लीह। देखैत देखैत सौंसे टोलक आइमाइ पछुआड़ बाटे आबि कऽ जमा भऽ गेलीह। नबहथवाली अपना आङन मे चाउर छटैत छलीह। ओ सूसर फेंकि कऽ दौड़लीह। नागदहवाली राहड़ि उलबैत छलीह। ओ खापरि पटकि कऽ दौड़लीह। इनार पर तनौतावाली कें रामवती दाइ सँ एकटा सजमनिक खातिर झगड़ा होइत छलैन्ह। पों पों सुनैत देरी दूहू गोटे झगड़ा छोड़ि दौड़लीह। सहजो पीसी कें चलि नहि होइत छलैन्ह। हुनका शुभकला दाइ हाथ धरा कऽ लऽ ऐलथिन्ह। एवं प्रकारें पण्डिताइन क आङन मे मेला लागि गेलैन्ह।

तावत् मोटर दरवाजा पर पहुँचि गेलैन्ह।

पंडिताइन आइमाइ कें सम्बोधित कय कहलथिन्ह—आब शुभ शुभ कऽ चलै चलथु। पुतोहु कें उतारथु।

आइमाइ क छाती उधकय लगलैन्ह मोटर मे ओहार लागल हेतैक। एक कोन मे कनियाँ घोघ तनने दबकलि सुटकलि बैसल हैतीह। सासु मुँह उघारि कऽ लोक कें देखौथिन्ह

कनियाँ लजा कऽ आँखि मुनि लेतीह। सुनै छिऐक बड़ सुन्दरि छैक। देखा-चाही केहन मुँह छैक।

एक झुण्ड स्त्रिगण मरौत काढ़ने कनियाँ कें उतारक हेतु दरवाजा दिस बिदा भेलीह। परन्तु बिच्चहि मे तेहन अभूतपूर्व घटना घटित भेल जे सभ आइमाइ मुँह बौने ठाढ़ि रहि गेलीह।

नवकनियाँ चमकैत चसमा लगौने उघारे माथ मोटर सँ उतरलीह और स्वामी क संग चट्टी पर खटखट करैत सोझे आङन मे पहुँचि गेलीह। आइ माइक आँखि चोन्हिया गेलैन्ह। कनियाँ परसनलिटी (व्यक्तित्व) वाली छलीह। सभ सँ एक बीत ऊँच। देहो दशा खूब भरल पूरल। सोहल तरकुन जकाँ रस उबडब करैत। पानिए दोसर। जेना पितरिया बासन क बीच मे एकटा स्टेनलेस करछु सँ आबि गेल हो।

कनियाँ अपन रिमलेस चश्मा सँ एक बेर बिहंगम दृष्टि दैत स्वामी सँ बजलीह—हम त एहिठाम किनको चिन्हैत नहि छिऐन्हि। परिचय करा दितहुँ त नीक होइत।

सभ आइमाइ अवाक् रहि गेलीह। नवहथवाली नागदहवाली कें चुट्टी काटय लागलथिन्ह; नागदहवाली तनौतावाली कें।

श्रीकान्त अपना माय दिस संकेत कय कहलथिन्ह—ई अहाँक सासु हैतीह।

कनियाँ अपना पर्सकें बगल मे दाबि दूनू हाथ सँ अञ्चल जोड़ि सासुक चरण स्पर्श कैलन्हि पण्डिताइन लाजे कठुआ गेलीह।

नीक जकाँ नाक कें झाँपि लेलैन्ह।

ततः पर अन्यान्य स्त्रिगण क यथायोग्य अभिवादन करैत कहलथिन्ह अहाँ लोकनि ठाढ़ि किऐक छी ? बैसइ जाउ। ई कहि कनियाँ आङन मे ओछाओल शतरंजी पर बैसि गेलीह। पुनः ननदि दिस ताकि बजलीह—पहिने एक गिलास ठंढा शरबत पियाउ।

आइ माइ दांत तर जीभ काटय लगलीह। फेर क्रमशः सभ गोटए शतरंजी पर आबि बैसैत गेलीह।

सुमित्रा भौजी कें शरबत दय स्त्रिगण कें कहलथीन्ह—अहाँ लोकनि गुम्म किऐक छी ? शुभ समय मे गीतनाद होमक चाही।

नागदहवाली उठौलन्हि—

हे जगदम्ब हरू सभ संकट त्रिभुवन तारिणि ए—गीत त बेस टहंकार सँ उठौलन्हि किन्तु सम्भार मे नहि रहलैन्ह। अंतरा पर अबैत अबैत भसिया गेलैन्ह।

कनियाँ शरबत पीबि कऽ बजलीह—'एहि गीत कें एना लय मे बान्हि कऽ कहिऔक।' और आंगुर सँ ताल दैत गाबय लागलीह—

हे जऽग। दऽम्ब। हरू सऽभ। संकट। त्रिभुवऽन। तारिणिए........

पुनः स्वामीक दिस ताकि बजलीह—हमर बेहाला त आनि दिय।

हम तेताला मे ई पद गाबि कऽ सुना दैत छिऐन्ह।

एम्हर कनियाँ क तेताला समाप्तो नहि भेल छलैन्ह कि बाहर स ससुर क चौताला शुरू भऽ गेलैन्ह। पं० जी एकाएक

बिहाड़ि उठबैत आङन मे आबि पहुँचलाह् और पंडिताइन पर गरजैत बजलाह्—एहिठाम नाच भऽ रहल अछि कि मोजरा भऽ रहल अछि ? हमरा घर मे ई सभ निर्लज्जता नहि चलत से कहि दैत छी। अहाँ लोकनि कें नाच करक हो त कटकी-बजार मे जा कऽ नाच करू गऽ। और ई आइमाइ लोकनि जे जमा भेल छथि से सभ अपन अपन घर जाइ जाथु।

ई कहैत पं० जी जोरसँ खड़ाम खटखटबैत बाहर भऽ गेलाह्।

सभ केओ सन्न रहि गेल। तखन सहजो पीसी निस्तब्धता भंग करैत बजलीह्—की ऐ आइमाइ सभ। आबो घर चलब कि घरबैआक मारि खा कऽ उठब ? आबो किछु सत्कार मे भाङठ अछि ? वर्ना, अहाँ लोकनि तेल सिन्दुर लेल बैसल रहू। हम चलैत छी।

ई कहि सहजो पीसी तरङि कऽ बिदा भऽ गेलीह। हुनका उठितहि सम्पूर्ण मण्डली पाछाँ लागि गेलन्ह। आब बाट मे गरमागरम समालोचना क फुलझड़ी उड़य लागल। सहजो पीसी पेनी छनलन्हि—हः हः हः। जे संसार मे नहि भेल छल से आइ पंडित क आङनमे देखि लेल। हम सत्तरि वर्ष क भेलहुँ परन्तु आइधरि एहन कनियाँ बर नहि देखने छलहुँ।

तनौतावाली टीप देलथिन्ह्—तः।

ई सभ अकड़हड़ कऽ देलक।..................नागदहवाली व्याख्या करैत बजलीह्—वास्तव मे ई मौगी जग जितने अछि। लाज संकोच क एको रत्ती छूति नहि छैक। जेना आँखिक पानि ढरि गेल होएक। पकठोस केहन ? ससुरोक अयलापर माथ झपलकै ?

रामवती दाइ टिप्पणी कैलथिन्ह—अहूँ चमत्कारे करैत छी। जे अंग स्त्री क लज्जा थिकैक से त झपनहि नहि छल आओर आहां के केवल माथे टा सुझैत अछि। नवहथवाली पुछ कैलथिन्ह—हम त लाजे मरि गेलहुँ। जखन आधा छाती उघारे रहतैक त लोक अंगिया पहिरबे करत किएक?

शुभकला दाइ परिष्कार करैत बजलीह—ऐ! आइ कालि इएह फैसन चललैक अछि। ओ हमरा सभ जकां देहाती नहि छैक जे दोबर कऽ कऽ आँचर राखत। रामवती दाइ खंडन कैलथिन्ह—मारू बाढ़नि एहन फेसन कें। हमरा लोकनि के एहि धूआ मे एना कऽ हैत?

पिलखवारवाली बजलीह—त! हमरा लोकनि सासुर ऐलहुँ त छौ मास धरि केओ उकासियो नहि सुनलक। बीस वर्ष सासुर बसना भेल तथापि औखन धरि पलटीक बाप सँ अनका सोझा बजैत संकोच होइत अछि। आओर ई त अवितहि सांय सँ टुभ टुभ बाजय लागि गेल। जेना श्रीकान्त ओकर सङभैया होथिन्ह।

शुभकला दाइ टिपलथिन्ह—संगभैया तँ छथिन्हे। दुहू गोटे कलकत्ता मे सङहि सङ बी० ए० पास कएने छथि; एके कालेज सँ।

नागदहवाली बजलीह—तँ ने श्रीकान्त कैं किछु गोदानैत नहि छैन्हि। एकपिठिया जकाँ लगैत छैन्ह!

तनौतावाली संशोधन करैत कहलथिन्ह—एकपिठिया नहि पितियाइन कहू। श्रीकान्त त ओकरा आगाँ, छुच्छुन लगैत

छथिन्ह। यदि ओ कसि कऽ एक झापड़ लगबैन्ह त श्रीकान्त कें उठि कऽ पानि पीबाक होश नहिं रहतैन्ह।

सहजो पीसी समर्थन करैत कहलथिन्ह—धुरजो। एहन ताड़गाछ कतहु माउगि भेलय, आओर पीठ केहन चाकर! लगै छल जेना सुखदेव पहलमान हो।

शुभकला दाइ पक्षान्तर ग्रहण करैत बजलीह—अहाँ जे कहिऔक। परन्तु हमरा त होइ छल जे देखिते रहिऐक। ओहन सुन्दर गठल देह सिनेमे टा मे देखने छिऐक!

नबहथवाली कें छन्न दऽ लगलैन्ह। चमकि कऽ कहलथिन्ह ई अहाँ की बजैत छी? एहि गाम मे एक सँ एक सुन्नरि अछि। पिलखीवाली कि ओकरा सँ कम्म गोरि छथि? हँ, तखन ई कहू ने ओ मेम जकाँ फैसन बनौने रहै अछि।

शुभकला दाइ प्रतिवाद करैत बजलीह—केवल गोरे भेने नहि होइ छैक। ओकरा मुँह पर जे पानि छैक से पिलखीवाली कें एहि जन्म मे हेतैन्ह? पीयर मुँह सुखायल समतोला सन सटकल गाल। और ओकरा देखियौक, अंगूर जकाँ छलकैत अछि।

नागदहवाली कें लेसि देलकैन्ह। व्यंग्य करैत कहलथिन्ह—आओर अहाँ कि सुखा कऽ मोनक्का भऽ गेलहुँ अछि?

शुभकला दाइ प्रत्युत्तर दैत बजलीह.........से आब अहाँ कचकचा कऽ जे कहू परन्तु हम बात कहब सत्ते। अहाँ लोकनि देह कें घुलावय जनैत छी। अपना कें ततेक दवा कऽ, लिवा कऽ लिहुड़ा क रखैत छी जे सिट्ठी बनि जाइ छी। पिलखीवाली के लियऽ। बीस सँ कम्मे मे घुलि कऽ निमकी बनि गेल छथि।

आओर ओहि कनियाँ के देखिऔ। बाइस चाबीस सँ कम नहि हैत। परन्तु डंभक लताम बनल अछि।

आब रामवती दाइ कें नहि रहि भेलैन्ह। बजलीह—हे गय्! बहुत सुनलिऔक। हमरा लोकनिक बेटी पुतोहु ओना उतान भऽ क छमकत से छमकय देवैक?

हमर कनियाँ जौं ओना साँय लग बैसि फदियाय लागय त छाउर लगा कऽ सट्ट दऽ जीभ खींचि लेवैक—हमरा त होइत अछि जे ई अजाति थीक।

भोजपड़ौलवाली नहू नहू बजलीह—ऐ दाइ। बूझू त हमरो मन मे येह बात आयल छल। किन्तु डरें नहि बजलहुँ। जौं ई कुलकन्या रहैत त माय सिखौने नहि रहितैक?

शुभकला दाइ सफाइ दैत कहलथिन्ह—एकर माय स्कूल मे काज करैत छैक। ओहो बराबरि बोर्डिंग मे रहैत आइलि। तें सामाजिक व्यवहार नहि बुझल छैक।

सहजो पीसी उत्तेजित होइत बजलीह— तखन एकर माइयो खेलाइलि हेतैक। केहन अगिया खढ़ खा कऽ एहन बेटी जनमौलक से नहि कहि।

नवहथवाली बजलीह—पंडित कें कि ई कथा कहिओ फुटलो आँखिऐ सौहैलेन्ह? बराबरि बिरोधे करैत रहलथिन्ह। तें ने विवाह मे गेलथिन्ह, ने द्विरागमन मे। ई त बुझू जे श्रीकांत क जिद्............

पिलखवाड़वाली पुछलथिन्ह—बेटा कें रोकलन्हि किऐक ने?

नवहथवाली कहलथिन्ह—आइकालि ककर बेटा दाब मे रहैत छैक? आओर जेठ माइ क मुइने श्रीकांत दुलरुआ भऽ

गेलाह्। जौं पं० जी कें पहिने बूझि पड़ितैन्ह जे अन्त एना बिसाएत त श्रीकांत कें कथमपि कलकत्ता राखि नहि पढ़-वितथिन्ह।

सहजो पीसी अध्याय समाप्त करैत बजलीह—जे बड़े गर्जैत अछि तकरा एहिना होइत छैक। ई पंडित अनका बड्ड दुसैत छलथिन्ह। आब लेथु। तेहन कप्पार पर पड़लैन्ह अछि जे सभ पोथी पतड़ा घुसरि जैतैन्ह। है लोकनि, हमर बात गिरह पारि लैत जाह। यदि ई मौगी एक दिन पंडितवेक माथ पर नहि नचैन्ह त हमरा नामे एकटा कुकूर पोसि लिहऽ।

❀ ❀ ❀

राति मे भोजन काल पं० जी स्त्री कें कहलथिन्ह—देखू। अपना पुतोहु कें सम्हारू। नहिँ त हमरा गाम छोड़य पड़त।

पंडिताइन पंखा होंकैत पुछलथिन्ह— से कियेक? पं० जा—ओ जे भोरे उठि कऽ सड़क पर टहलय जाइत छथि से देखि सौंसे गाम हँसैत अछि। पंडिताइन—ओ कहै छथि जे भोर मे टहलवाक हिस्सऽक छन्हि। एहि सँ स्वास्थ्य बनैत छैक।

पं० जी—हमर नाक कटा रहल अछि और ओ अपन स्वास्थ्य बनबैत छथि! आब हुनका द्वारे हमरा वाह्य भुमि-ओक बाट बंद भऽ जाइ अछि।

पण्डिताइन डराइत डराइत कहलथिन्ह— कि करबैक? कनेक आँखि मूनि लेब।

पं० जी उत्तेजित भय बजलाह—की बजलहु? हम आँखि मुनि लियऽ। और ओ चश्मा पहरि कऽ सौंसे गाम बुलल घुरथु।

पण्डिताइन दही परसैत कहलथिन्ह—ओ कहै छथि जे साँझ प्रात नहि बहरैने जी औनाय लगैत अछि।

पं० जी बजलाह—एहीठाम मुजौनावाली कें देखिऔन्ह। चौदह वर्ष बसना भेलैन्ह। आइ धरि कहियो चौखट सँ बाहर पैर रखलैन्हि ?

पण्डिताइन कहलथिन्ह—मुजौनावाली त हमरो लोकनि सँ भरि मुँह नहि बजैत छथि। और नबकी कनियाँ कालिह स्कूल क मास्टरो सँ गप्प कैलन्हि अछि।

पं० जी थारी पटकैत बजलाह—आब हम कतहु पड़ा जाएब। भला मास्टर सँ हुनका कोन काज छलैन्ह ?

पण्डिताइन—मास्टरे कें हुनका सँ किछु बुझबाक छलैन्ह। जखन श्रीकांत बुत्तें नहिं भेलैन्ह त कनियाँ बुझा देलथिन्ह।

पं० जी बजलाह—श्रीकांत हुनका सिक्का पर चढ़ा रहल छथिन। जखन टीक धरतैन्ह त बूझि पड़तैन्ह। ऐ ! ओम्हर की भऽ रहल अछि ?

पण्डिताइन—अहींक पुतोहु इसराज बजा रहल छथि।

पं० जी—आइ इसराज बजा रहल छथि। कालिह पेशवाज पहिरि कऽ नचतीह। ताहि सँ बरू कहियौन्ह जे एके बेर......

पंडिताइन—ओ सुमित्रा कें सिखा रहल छथिन्ह।

पं० जी—ओ ओकरो दूरि कऽ रहल छथिन्ह।

पण्डिताइन कहलथिन्ह—ऐ कि करबैक ? जे हाइ छेक से होमय दियौक। अहाँ खाउ। थोड़े और दही लियऽ।

पण्डिताइन एक बाटी छल्हिगर दही आगाँ मे दैत पुछल-थिन्ह—ऐ! एकटा बात कहू ? तामस त ने हैत ?

पं० जी—की ?

पण्डिताइन मेहिंया मेहिंया कऽ कहय लगलथिन्ह—पुतोहु के एहि ठाम खाली बैसल नहि मन लगैत छैन्ह। ओ आगाँ पढ़य चाहैत छथि। पटना दरखास्त पठा देने छथिन्ह। कहै छथि जे जुलाई सँ नाम लिखाएब। ओतय होस्टलमे रहतीह। कहै छलीह जे बाबूजी कें कहथुन्ह जे एक सै टका मास देल करताह।

पं० जी क आगाँ अन्हार भऽ गेलैन्ह। बजलाह—घर मे रस्सी हैत ?

पण्डिताइन—से किऐक ?

पं० जी—आब हम फाँसी लगा कऽ मरि जायब। पुनः बजलाह—फांसी त गर मे ओही दिन लागि गेल जहिया हमर कुलबोरन ओहन ठाम भसिया गेलाह। एहु मे छौ हजार दैत रहैन्ह। अकौर मे सात हजार दैत रहैन्ह। लगमा मे आठ हजार दैत रहैन्ह। से सभ टा छोड़ि एहि हड़ाशंखिनी क फेर मे पड़ि गेलाह। बी० ए० धो कऽ कि लोक चाटत ? एकटा मकुनी कें उठा लैलाह। आब सै टका मास हिनका चारा देल करियौन्ह। श्रीकांत दोसर ठाम विवाह करितैथ त हमर बोझ हल्लुक होइत। पुतोहु अबैत से अहाँ क बोझ हल्लुक करैत। और ई एकटा ढोल गरदनि मे लटकौने ऐलाह अछि। श्रीकांत त पढ़ि कऽ कमैताह। हुनकर बहु एम० ए० पास कऽ कऽ की करथिन्ह ?

पण्डिताइन कहलथिन्ह—से नहि बुझ। ओहो कमैताह। तैं पढ़वा लेल एतेक व्यग्र छथि। कहै छली जे जौं बाबूजी खर्च नहिं देताह त हम अपन गहना बेचि कऽ पढ़ब।

पं० जी सानल दही चीनी छोड़ि कऽ बजलाह—ओ बिना हमर पाग खसौने नहि रहतीह। हुनका जे मन मे अबैन्ह से करथु। हम हरद्वारक बाट धरैत छी। आब बिना वानप्रस्थे हमरा दोसर उपाय नहिं। यदि एहिठाम रहब त फाँसी लगाबय पड़त।

ई कहैत पं० जी तमकि कऽ अचाबक हेतु बिदा भेलाह। परन्तु आङन सँ बाहर होइतहि किदन मे लटपटा कऽ खसि पड़लाह। ओतहि सँ चिचिऐलाह—'ए! हमरा फाँसी लागि गेल। पण्डिताइन लालटेन लऽ कऽ दौड़लीह। पं० जी अपना स्थूल शरीर कें जाल सं छोड़बैत बजलाह—इ रस्सा के टङने अछि?

पंडिताइन भयभीत होइत कहलथिन्ह—कनियां एकटा खेल खेलाइ छथि? कीदन कहै छैक बड़मिन्टन। तकरे जाल लगौने छथि।

पं० जी क्रोधान्ध होइत बजलाह—श्रीकांत सेहो खेलाइत छथि?

पण्डिताइन चुप्प रहलीह।

पं० जी चिचिआ कऽ बजलाह—और गाम क छौड़ा सभ सेहो खेलाय आओत? चारि टा लुच्चा लफंगा एहि आंगन मे जमा हैत और हमर पुतोहु सभक बीच मे कुदतीह? ई सभ हम नहि होमय देब। लाउ एखने सलाइ, खरड़ि कऽ एहि जाल मे लगा दिऔक।

पंडिताइन कहलथिन्ह—ऐ ! युगे बदलि गेलैक त अहाँ

किऐक खौंझाइ छी ? चलू, दलान पर हम हरदि चून लगा दैत छी।

❀ ❀ ❀

आधा रातिक समय। पं० जी दालान पर सूतल रहथि। परन्तु निन्द नहि पड़ैन्ह। कच्छमच्छ करैत भगवान कें गोहराबय लगलाह—हे मधुसूदन, कोना कऽ ई जपाल माथ पर सँ उतरत ? हे चक्रधारी, कोनहुना एहि जाल कें काटू।

तावत पंडिताइन दौड़ल ऐलथिन्ह। पं० जी क देह झमारि कऽ उठाबय लागलथिन्ह—ऐ उठू, उठू। अनर्थ भऽ गेल।

पं० जी—से की ?

पंडिताइन—कनियां कें सांप काटि लेलकैन्ह।

पं० जी—से कोना ?

पंडिताइन—घर मे सूतल छलीह। ऊपर चार सँ सांप खसि पड़लैन्ह। ठोरे मे हबकि नेने छैन्ह।

पं० जी—कोना बुझलिऐक ?

पंडिताइन—श्रीकांत अपना आँखि सँ देखलथिन्ह। जुआएल गहुमन छलैक।

पं० जी हड़बड़ा कऽ उठलाह। घर मे जाऽ कऽ देखै छथि त कनियां अचेत पड़ल छथि ; मुँह सँ गाउजि चलि रहल छैन्ह।

भरि राति झाड़फूक भेल। अनेको डाक्टर वैद्य अयलाह। दवाइ पड़लैन्ह। परन्तु कनियां कें आंखि नहिं फुललैन्ह। ओ तेहन रुसान रुसलीह जाहि मे बौंसब असम्भव। सासु ननदि दयादनी इत्यादि छाती पीटय लगलथिन्ह। अड़ोसिन

पड़ोसिन घेओना पसारलन्हि। स्वामी जे माथ पर हाथ दऽ कऽ गुम्म भेलथिन्ह से गुम्मे रहि गेलथिन्ह। पंडित जी लोक सभ कें सबोधित कय कहलथिन्ह—आब तकइ की जाइ छह? अर्थी उठावह।

श्रीकांत कनियां क बाजा, पुस्तक, कविताक कापी और खेलक सामिग्री सभटा वस्तु चिता पर सजा देलथिन्ह। देखैत देखैत आगिक लपट उठल और कनियां अपन साज सामान क संग पं० जी क घर सर्वदा क हेतु खाली कऽ देलथिन्ह।

अन्त्येष्टि क्रिया क अनंतर पं० जी घर ऐलाह त देखै छथि जे पंडिताइन सिसकि रहलि छथि।

पं० जी हुनका बजा कऽ नहूं नहूं कहलथिन्ह—अहां कनै छी किऐक? श्रीकांत कें दस हजार लऽ कऽ दोसर विवाह करा देबैह। तेहन कनियां आनि देब जे अहां क तरबा रगड़ैत रहत। ई त बूझू जे गरक घेघ टरि गेल। भगवान जे करै छथि से नीके क हेतु।

पण्डिताइन कनैत कनैत कहलथिन्ह—ओ फुलकुम्मरि एहि घर क योग्य नहि छलि। मडुआक खेत मे कतहु केसर लगलैक अछि? भगवानो के अनकच्छल लगलैन। तैं उठा लेलथिन।

कन्या-निरीक्षण

प्रो० प्रबोध नारायण सिंह, एम० ए०

मदन बाबू छलाह अत्यन्त आधुनिक विचारक युवक। स्वयं बी० ए० मे दू बेर असफल भेलाक बादो हुनक मन सँ ई बात नहिं दूर भेलन्हि जे हम धुरन्धर विद्वान छी। ओ फेल भेल छलाह अंगरेजीए मे, किन्तु अपन दैनिको जीवन मे, अंगरेजी छोड़ि अन्य भाषामे बाजबाक अवसर अएला उत्तर हुनक मुह बिचकि जाएत छलन्हि। मातृभाषा मैथिली क नामे सँ हुनका घृणा छलन्हि। यज्ञोपवीत तोड़ि चुकल छलाह। शिखाक भार सँ पहिनहिं मुक्त भए गेल छलाह। अपन सामाजिक परम्परा हुनका लेल नीरस तथा त्याज्य भए गेल छलन्हि।

हुनक निठट्ट देहाती धर्मपत्नी जड़ैया तथा अवहेलनाक कारणें इहलोक सँ प्रस्थान कए चुकल छलीह। तत्पश्चात् पाँच वर्ष व्यतीत भए गेल, किन्तु मदन बाबूक विवाह नहि भेलन्हि। हुनक शर्त्त सभ सुनि घटक सभ पलायमान भए जाएत छलाह। मदन बाबू जे कालेज मे पढ़ैत छलाह ताहि ठाम सहशिक्षा नहि छलैक। अतः रोमान्स क कोनो सम्भावना नहि देखि हुनक इच्छा भेलन्हि जे विवाह क विज्ञापन कराबी।

ताहि समय एक वृद्ध घटक अएलाह। ओ कहलथिन्ह जे हम जे कन्या क कथा लए आएल छी से एक अवकाशप्राप्त डिपटी साहेब क अपार सम्पत्तिक एकमात्र अधिकारिणी छथि;

सुन्दरता केर तँ वणने की करू ? साक्षात् अप्सरा। मदन बाबू गंभीर भाव सँ बाजि उठलाह जे ई सभ गुण हो तब तँ वार्त्ता भए सकैत अछि, अन्यथा नहिः—

(१) कन्या अंगरेजी मे पारंगत हो।

(२ नाच गान मे निपुण हो।

(३) बाजबा मे निर्भीक हो।

(४) आधुनिक सभ्यता सँ पूर्ण परिचित हो।

(५) सुन्दर हो।

(६) उपर्युक्त विषयक जाँचक लेल कन्या सँ वार्त्तालाप क सुयोग चाही।

वृद्ध छलाह अनुभवी। किछु टीका-टिप्पणी नहि कए, सभ स्वीकार कए लेलथिन्ह आओर तिथि निश्चित कए मदन बाबू सँ कलकत्ता आबि स्वयं कन्या निरीक्षण करबाक आग्रह करैत विदा लए चलि देलन्हि। मदन बाबू मने मन अत्यन्त प्रसन्न भए आतुरता पूर्वक ओ निर्द्धारित तिथि क प्रतीक्षा करए लगलाह।

निश्चित तिथि सँ एक दिन पहिर्नाह मदन बाबू अपन छोट भाय कें संग लए कलकत्ता आबि गेलाह आओर अपन एक मित्र क ओहि ठाम ठहरि फोन सँ खबर दए देलथिन्ह जे हम कालिह सन्ध्या क चारि बजे आबि रहल छी। कन्या निरीक्षण क लेल मदन बाबू क संग मे छोट भाय तथा ओ मित्रो छलाह। तीनू गोटे बालीगंज मे ओहि नम्बरक मकान क पता लगा निर्द्धारित समय पर पहुंचि गेलाह। भव्य भवन मे गद्दीदार कुर्सी पर बैसाओल गेलाह। ओहि कमरामे पहिनहि सँ गीत वाद्य क सभ साज सरंजाम सुव्यवस्थित भावे राखल छलैक।

थोड़बेक देर मे चारि-पाँच टा नवयुवती आबि ई तीनो लोकनिकेँ घेर लेलकन्हि–सभ एक सँ एक सुन्दर। ओहि मे सबस बेशी सुन्दर जे छलीह हुनकर मुख पर मुस्कुराहट छलन्हि। हुनक लिपस्टिक सँ चम चम करैत अधर, पाउडर विलेपित कपोल तथा कज्जल रंजित विशाल नयन पर मदन बाबू क दृष्टि लुब्ध भए अटकि गेलन्हि। ततबहि मे ओ वृद्ध घटक आबि कए परिचय करौलथिन्ह। मदन बाबू क मन आओर चपचपा गेलन्हि जखन ओ सुनलथि जे वेह सुन्दरी छलथिन्ह कन्या; जनिक निरीक्षण क लेल ओ सभ आएल छलाह। ओ भावी स्वर्गक कल्पना मे लीन भए रहल छलाह कि हठात् कन्या हाथ बढ़ा कए शेक हैंड [कर मर्दन] कए अंगरेजी मे बाजि उठलीह—

हलो मिस्टर झा, वी आर वेरी फारचुनेट टु सी यू आल" (अहा मिस्टर झा, हम अपने लोकनिक दर्शन सँ कृतार्थ भए गेलहुं)।

मदन बाबू ओहि सुन्दरीक मुसकान पर जतेक मुग्ध भेलाह ताहि सं बेसी ओकर अंगरेजीक उच्चारण पर चकित। एहन सुन्दर उच्चारण तँ अंगरेज अथवा कोनो-कोनो एंग्लो इण्डियने टा क भए सकैत अछि। ओ टुकदुम टुकदुम कए कोनो प्रकारें बाजि रहल छलाह, किन्तु कन्या धारा-प्रवाह रूपें बजैत छलीह। कतेक स्थल पर मदन बाबू ओकर अंगरेजी बुझबो नहिं कएलन्हि। वार्त्तालाप क प्रसंग मे ओ किछु प्रश्न पूछक लेल आग्रह कएलकन्हि, किन्तु ई कहलथिन्ह जे प्रश्नक कोनो आवश्यकता नहिं। तखन कन्ये पूछि बैसलीह, जकर अर्थ ई छल—

2

"विवाह क की अर्थ ?"

मदन बाबू कें किछु नहिं फुरलन्हि। सिटपिटा गेलाह। कन्या बिहुँसि कए हुनक दाढ़ी हिला देलकन्हि। ओ लज्जा सं गड़ि गेलाह। पुनः कन्या बजलीह जे आब हमर भारतीय नृत्य देखल जाओ। सब सावधान भए गेलाह। आध घण्टा धरि आँखि मटका कए, लचकि-मचकि कए एहन सुन्दर नाच कए-लन्हि जे सभ चकित भए गेलाह। वृद्ध घटक बीच-बीच मे मदन बाबू क दिश देखि-देखि मुसका रहल छलाह।

कन्या भारतीय नृत्य समाप्त कए ऐलीह आओर मदन बाबू क हाथ धए खींचि लेलखिन्ह। ओ यन्त्रवत् ठाढ़ भए गेलाह। सुन्दरी हुनका डाँड़ मे हाथ दए अनुनय करि उठलीह जे "डार्लिंग, अहूं हमरा संग डान्स करू।" मदन बाबू क भाइ आँखि मूनि लेलन्हि। इने मदन बाबू क चेहरा तं फक! काटू तँ खून नहि! बिहुंसल फूंटि जकाँ मुह बा, बाजि उठलाह जे "हम तँ नहि जानैत छी।"

ई सुनितहिं कन्या क आँखि लाल भए गेलन्हि। ओ क्षुब्ध स्वर मे बाजि उठलीह—"अहाँ गान कए सकैत छी?" मदन बाबू अढ़ैया सनक माथा डोलबैत कहलथिन्ह "नहिं"।

एतबा सुनितहिं कन्या सिंहिनी जकाँ गरजि उठल। अंगरेजी मे फूल, नन्सेन्स, रास्केल तथा कतेक विशेषण सँ हिनका विभूषित कएलकन्हि तकर कोनो ठेकान नहिं। ओ कहलकन्हि जे "अहाँ कें कोनो अंग मे लाज नहिं जे स्वयं तँ अंगरेजी क उच्चारणहुं धरि ठीक नहिं अछि, नाच गान क सी अक्षर धरि नहिं जानलहुं, तखन ई शिक्षिता तथा आधुनिका क प्रलोभन

किऐक ? आधुनिका बहु अहाँ क थुथुन मे कारीख नहिं नीप देत ?"

वृद्ध घटक अखनहुं धरि मुसका रहल छलाह। ओ कन्या कैं शान्त करैत बजलाह जे "छोड़ह ई विषय, हम की जनैत छलहुं जे ई अछरकट्टू रार छथि; अन्यथा भला ई डींग हाँकबाक की जरूरत छलन्हि ?

मदन बाबू क माथा मे चक्कर आबए लागलन्हि। तखनहि हुनक मित्र हाथ धरि हुनका खींचि बाहर लए आनलथि।

मदन बाबू अपन भाय तथा मित्र कैं बारण कए देलथिन्ह जे ई घटना क वर्णन कदापि कतहुं नहिं होमय। तकर बादे एक घटक जखन अएलाह तखन मदन बाबू दोसरे सभ शर्त्त पेश कएलन्हि—

"कन्या सुशील, गृहकार्य मे दक्ष तथा स्वस्थ चाही।" घटक क आश्वासन पर वार्त्ता ठीक भए गेल; विवाहो शीघ्रे भए गेल। मदन बाबू अपन देहाती धर्मपत्नी क संग प्रसन्न छलाह। पुत्रोत्सव मे ओ वृद्ध घटक सेहो अएलाह आओर कहलथीन्ह जे कन्या क अभिनय कए अहाँ कैं जे रास्ता पर आनलथि ओ एक ग्रेजुयेट एंग्लो इंण्डियन फिल्म एक्ट्रेस छलीह।

पोखरि खोर

डा० ब्रजकिशोर वर्मा

आइ सै सौ साल पहिने ।

ओकरा जीवन में ओ बड़ा भयानक क्षण छलैक । दू टा जवान होति बेटा एके सिरहने ओइ मरकी में चल गेलैक । मांग क सिन्नूर पहिने से धोअल छलैक । भगवान देल बोनि छीन लेलथिन्ह । खेत पथार छलैहेने । पांच की छः बिघा सबटा हेतैक ।

गां घर ओकरा काटै दौड़इ । अपन चरखा ल कै बुढ़िया अपना कोली लग क झरबरिया आम गाछ तर बैसि सूत काटै आ निर्निमेष दृष्टि सै रहि रहि कै, बेटा सबहिक चिता पर ढिमकी दिस ताकै ।

गाय भैंस ओइ मांठ पर चरइ । हथ हथ भरि जी बाहर केने गाय, भैंस आ चरवाह ओइ बुढ़िया क चारू कात बसइ । दूर दूर तक कतौ पानि क आसरा नइ छलइ ।

बुढ़िया क जी में एकर बड़ कचोट । गाम क हाथीवला, बखारी वला आ सोना रूपा वला सब जे हिम्मति नइ कै सकल, बुढ़िया से हिम्मति केलक । किछुए वरष क बाद बुढ़िया एकटा विशाल पोखरि कै खुनवावइ मे हाथ लगा देलकइ ।

बुढ़िया क हिम्मतिक आगू , धनिक सब झमान भ उठलाह ।

लोक कहइ जे धरती पर गंगा आनइ वला भगीरथ जों ओइ दिन समक्ष मे ठाढ़ रहितथिन्ह तै बुढ़िया क तपस्या देखि नत मस्तक भ जइतैथ ।

बुढ़िया एके साँझ खाइ । कुशासन पर ओही ठां सुति रहइ । छः पर छः चलैत रहल । आठ गाम क लोग तमाशा देखइ लेल आवइ । एक दिन एहनो भेलइ जे एक महाड़ सँ दोसर महाड़ तक नीलजल-राशि लहरा उठलइ ।

ओ बुढ़िया ओइ पोखरि क महाड़ पर कोन कोन अमृत फल आ सुगन्धिमय फूल अपना हाथे नइ रोपलक ? पंचवटी लागल । धातृ क कतरल पात हवा मे झूमि उठल । हरित नीलजलराशि पर लाल कमल तेना चमकइ जेना मरकत पत्र पर लाल मणि । सँ ओइ बुढ़िया क यश-गाथा, हिलकोर क पंक्ति मे लिखल गेल हो ।

से ओ बुढ़िया तै नइ रहल, मुदा ओइ असहाय अबला क कीर्ति रहलइ । दनही हो त ओइ दादी पोखरि में, छठ क अर्घ उठय तै ओइ दादी पोखरि क जल में आ आम महु क ब्याह हो त ओइ दादी पोखरि क महार पर ।

युग बदलल ।

कोना ने कोना कै पोखरिक महार पर क सबटा गाछ बिरीछ जमींदार क भ गेलैन्ह । ककर मजाल जे ओम्हर कोइ ताकबो करत । जे आम, कटहर, जासु, धातृ आ लताम लोक कै पकड़ि पकड़ि कै खुआओल जाति छलैक से डाक पर निलाम भ कै बाजार जा लागल । कमल दह उकन्नन भ गेलैक आ बर्छी क

नोक सन सन कचुरी सगरे पसरि गेलैक।

पुनः युग बदलल। स्वराज आयल।

पोखरि टा कहुना ढहियो ढनमना कै कायम रहल। पानि सुखा गेलैक। चारू कात दड़ाड़ि फाटि गेलैक।

से ओइ दिन दू टा नवयुवक प्रवास सँ बहुत दिन पर गाम घुरल चल अवइ छल। सांझे राति छलैक। वैशाख मास क पछवा एखनहिं दम धोने छल। "ची चूँ चकर चुक" गाड़ीक वेखनहन क पहिया जेना कोन गीत क टुटल कड़ी रहि रहि कै दोहरा दैत छलैक।

दूनू युवक बातचीत मे मस्त छल। गप्प क विषय छल कौरवेट साहेब क लिखल "मैन इटर आफ कुमांऊ।" कुमाउ क नरभक्षी बाघ।

"गाड़ी रोक" ओइ पोखरि लग अबितैह दूनू बाजि उठल।

गाड़ी ह कैल गेल। दूनू उतरलाह।

"ह ह" एकटा कहल कैक 'दादी पोखरि लग आबितैह होइये जे प्रवास समाप्त भेल। हमरा लोकनिक जीवन क कत्ते मधुर, तीत आ अम्मत क्षण अइ पोखरि क संग जुड़ल अछि।"

"मुदा इ की" दोसर ओइ उदास इजोरिया मे एकटक पोखरि दिस तकैत बाजल—"पोखरि तै टटा गेल छैक। खाली बीच मे किछु पानि छैक।"

दूनू पोखरिक भीतर गेल। मोन जेना कानि उठलइ। चारू कात एक हक हाथ कै कोदारि सै दकचल इजोरियामे बूझि पड़इ जेना खिखिर खुरछाही कटने हो।

"हमरा लगइये जेना इ पोखरि आहत भ कै कुहरि रहल हो" एकटा कहलकैक "हम अइ पोखरि कै देखितइ ओइ बुढ़िया दादी क महानता क प्रति नतमस्तक भ जाति छी।"

"गां गां, मिथिला एत्ते, बान्ह, पोखरि आ मन्दिर अन्ते कत्तौ नइ छइ। ई या तै राजा क बनबाओल न तै अबला असहाय, पुत्रहीना वा विधवा क बनबाओल। इ उदात्त भावना अन्तय कतै भेटत। राजा बनवौलक एकठां दू ठां, इ बनवौलनि गां गां, ठां ठां।"

"बड़मनवा सब खा गेलैक" गाड़ीवान बाजल—"सात हजार टाका पोखरि उड़ाहैक मंजूरी भेटल छलैक। पांच छौ सै टाका अत्ततह खर्च भेल हेतैक। सबटा टोप आ टोपी वला गटक क गेलैक। अपना और दिस सगरे मोटका धोती बला सब पोखरि आ बान्ह कै खेने फिरैत छैक। ओहेन ओहेन, बान्ह, नाला आ पोखरि कै गिड़ि जाइ छइ आ ढेकारो ने करैत छइ।"

"पोखरि-खोर, राष्ट्र-खोर नरभक्षी सब" एकटा युवक कहलकैक—"एकरा सै त्रान दियाबैक हेतु समाज क शत शत सात्विक जिम-कौरवेट चाही।"

सहसा पोखरिक उतरबरिया महाड़ पर सै अत्यन्त मद्धिम स्वर मे घौना पसारि कै कनैक ध्वनि सुनाव देलकैक। दूनू युवक गाड़ी पर बैस चुकल छलाह। गाड़ीवान भयभीत होति कहलकैक-"जहिया सै खदराहा सब ठीका ल कै अइ पोखरि कै दकचलकैक अछि तहिया सै कहियो कहियो राति बिराति कै अइ पोखरि पर सै अहिना कनैक ध्वमि सुनाव दैत छैक।"

गाड़ी चलि पड़ल।

"हे देखहक" एकटा युवक दोसर क कान लग फुसफुसायल—"अइ पार मे जेम्हर सँ कनैक आबाज अवैत छैक, बूझि पड़ैत छैक जेना एकटा कोनो बुढ़िया कैं सौ सौ गीदर घेर कै नोचि रहल हो। ओ बुढ़िया अपना क्षीण हाथ सँ अनवरत संघर्ष क रहल अछि। ई दृश्य लगले पानि पर देखैत छियैक आ लगले महाड़ पर।"

"ओ बुढ़िया साक्षात मिथिला थिकइ बन्धु। हजार हजार पोखरि-खोर, समाज-खोर, आ मानव-खोर ओकरा नोचि रहल छैक, नोचिते जा रहल छैक। आवश्यकता छैक जे अइ अभौतिक नरभक्षी सब लेल हमरा लोकनि नैतिक जिम-कौरबेट बनि कै एकरा पाछू पड़ि जाइ।"

कानैक स्वर जेना उच्च होति गेलैक।

—::❀::—

धर्म

श्री बाबू साहेब चौधरी

आइ शिवचतुर्दशीक महोत्सव थीक! आजुक दिन बहुतों हिन्दू व्रत कए महादेवक पूजा अर्चना करइत छथि। हमरा घर सँ आधा कोस पर मनुष्यक सब पाप कें अपना अन्तर में नुका कए मुक्ति देनिहारि भागीरथी कलकल निनाद करइत बहि रहलि छथि।

गंगाक काते काते हमरा ग्रामक समीप चारि पांच टा छोट छोट ग्राम छैक। स्टेशन समीप छैक। जन संख्या थोड़ रहबाक

हेतु पड़ती जमीन पर्याप्त छैक। स्टेशनक कात मे एकटा विशाल कुशियार क मिल चलि रहल छैक। मिलक मालिक सेठ जी आइ सँ दू वर्ष पहिने एहिठाम एकटा छोट, परन्तु बड़ भव्य शिव मन्दिर बनौने छथि। दूइये बर्ष मे एहि मन्दिरक ख्याति दूर दूर तक फैलि गेलैक अछि। कोनो पावनि-तिहारक दिन बहुतों लोक एहिठाम अबइत छथि।

हम आइ दूइ वर्षक उपरान्त ग्राम आयल छी। मन्दिरक प्रशंसा सुनि एवं शिवजीक दर्शनक लालसा सँ हमहुँ अपन एकटा नास्तिक मित्रक संग ओहिठाम पहुंचलहुँ।

यथार्थ मे मन्दिर अद्वितीय छैक। लाखो टका क लागत सँ बनल छैक। मूर्त्ति बहुमूल्य एवं दर्शनीय अछि। फर्श दर्पण जकां चमकि रहल छैक। पूजाक सब पात्र सोनाक बनल छैक।

हजारो व्यक्ति दर्शन क हेतु मन्दिर मे प्रवेश कए रहल छथि। घंटा जोर जोर सँ बाजि रहलैक अछि। फूल, चानन अक्षत, गंगाजल अओर चढ़ौआ रुपया, पाइ, सोना, चाँदी एकहि संग शिव लिंगक ऊपर अर्पित भय रहल अछि। लिंगक समीपहि मे एकटा बड़का थार राखल छलैक। जाहि मे "पाइ" सावन भादवक वर्षाक बूँद जकाँ बरसि रहल छैक। पुजारी चिचिया चिचिया कय यात्रीवर्ग कें पाइ चढ़यबाक हेतु प्रोत्साहित कय रहल छथि।

हमहूँ दर्शन कए मन्दिरक प्रशंसा करइत बाहर अएलहुँ। फाटक पर फाटल, मैल दुर्गन्ध सँ भरल कपड़ा पहिरने चलबा फिरबा मे असमर्थ एकटा आन्हर आदमी भेटल। ओकरा हाथ मे लाठी धरौने एकटा आठ नव वर्षक बालिका छलैक।

दुनू गोटाक केश फहराइत छलैक। पेट पीठ मे सटिगेल छलैक। ओ हाथ पसारि कय मांगि बैसल ''मालिक ! एकटा पाइ''......

हम ओहि ठाम ठाढ़ भय गेलहुँ। हमर नास्तिक मित्र सेहो ओही ठाम ठाढ़ छलाह। तबहि मे ओहि मन्दिरक निर्माण कैनिहार सेठजी दर्शन कए बाहर अयलाह।

फेर वैह चिर परिचित शब्द में गिड़गिड़ाइत ओ बालिका बाजि उठल :—''मालिक ! एकटा पाइ...मुड़ही''......

सेठजी फटकारि कए कहलथिन्ह—''हट आगाँ सँ; अहि बदमास भिखमंगा लोकनिक द्वारें त रास्ता चलब सेहो मुश्किल भए गेल अछि।'' पुजारी कहि उठलथिन्ह जे ई सब रोजगारी थीक सेठजी। अओर धक्का मारि कए ओकरा हटा देलथिन्ह।

सेठजी बजलाह—''हमर चिार अछि जे जल्दी मन्दिरक त्रिशूल सोनाक बनबा दियैक'' अओर बिदा भए गेलाह।

हम किंकर्तव्य-विमूढ़ जकाँ ठाढ़ भेल कखनो गंगा मे स्नान करबाक लेल अबैत लोकक समूह कए देखि रहल छी, जे गंगाक धार मे हुनका खुश करबाक हेतु पाइ, रुपया फेंकि रहल अछि। कखनो फल, फूल, अओर मिठाइ नेने मन्दिर मे चढ़ाबय जाइत भीड़ कें देखि रहल छी। कखनो पुजारी क आगुक थारी मे बरसैत पाइकें देखि रहलछी अओर कखनो ओहि आदमी सब कें देखइत छी जे भयातुर दृष्टि सँ एक एक पाइ क लेल लोक सबहक सामने अपन हाथ पसारि रहल अछि !

एतबहि मे हमर तन्मयता भंग करइत ओ नास्तिक मित्र बाजि उठलाह ''चलह ! एकरे तों लोकनि धर्म कहैं छहक !''

फेरीवला

प्रो० अणिमा सिंह, एम० ए०

हम लोकल ट्रेन सँ चौबिस परगना क एक गाँव सँ कलकत्ता आबि रहल छलहुं। हमरा लोकनि तेसरा दर्जामे सफर कए रहल छलहुं। प्रायः दू बजे क समय छल। हमरा संग हमर एक समांग सेहो छलाह। हमरा लोकनि आजुक आर्थिक विषमता पर बातचीत कए रहल छलहुं। एक एक टीसन पर पाँच पाँच छ-छ टा फेरीवला सभ हमरा आर क डिब्बा मे आबि कए चिकरए चेंचियाबए और अपन अपन भाग्य कैं अजमौलाक बाद चलतीये गाड़ीं क हैंडिल पकड़ि पकड़ि लटकि फटकि कए दोसर डिब्बा मे पहुंचि जाय। आठ-नौ वर्षक ई नेना भुटका सभ कैं चनाचूर अथवा लेमनजूस बेचैत देखि हमर हृदय अनायासे आर्द्र भए उठए।

अकस्मात् हल्ला सुनि हमरा सभक वार्त्तालाप मे बाधा पड़ि गेल। उलटि कए देखी तँ ओहि डिब्बा मे दू टा फेरीवला आपस मे तुमुल वाग्युद्ध कए रहल छल। दुहुक हाथ मे महाभृङ्गराज तेल क शीशी छलेक।

पहिल फेरीवला—हम पुछैं छियौक जे हम ई डिब्बा मे एलौं तँ तों किये एलें?

दोसर फेरीवला—आएब ने ते की? गाड़ी कि तोहर किनल छियौक?

पहिल—आ' तोहर कि बाप क किनल छियौक? फेर उतरैं छें कि छौ गरहदसा लिखल?

दोसर—कि तोरा हुकुम सँ? बड़ा भेला हें गलगर!

पहिल—गलगर कहलें हरामजादे, तँ छातीक हाड़ हम तोड़ि देबह। खच्चर कहीं के! फेर उतरै छे कि नै?

दोसर—नैं, नैं, नैं; हगिरज नैं।

पहिल—अच्छा, तँ तों बेच तँ।

दोसर—बेचब ने तँ की?

पहिल—बापक जन्मल हैबें तँ बेच ने, हम देखियौक।

दोसर—आ तों बापक जनमल छें तँ रोक ने!

पहिल—कहलियौ तँ; ठीक जँ बापक जनमल छें तँ बेच ने ले एको टा सीसी हम देखियौक!

फेर तँ दूनू टा चिकरए लागल—अढ़ाइ टका, अढ़ाइ टका, केवल अढ़ाइ टका। ई तेल लगौने सँ इंच भरि क केश गज भरिक भए जाइछ। सफेद बाल करिया खट-खट भए जाइछ, बूढ़ एकर सेवन सँ जवान भए जाइछ और जवान पट्ठा भए जाइछ, चनैल पर नव दुर्वादल जकाँ केस जनमि आबैछ। असमय मे बाल गिर पड़नाइ, सिर मे दर्द भेनाइ; आँखिक ज्योति कम भेनाइ सब प्रकारक रोग क लेल महौषधि। लियऽ, लियऽ, मात्र अढ़ाइ रुपैया।

हमरा सभ क सामनेवला बेंच पर बैसल एक आदमी ई दुहु क झगड़ा मे बेसी दिलचस्पी लए रहल छल और बीच बीच मे सह सेहो देने जाइत छल।

एमहर झगड़ा तीव्र सँ तीव्रतर भए रहल छल। अहिना लागए जे एक दोसरा पर आब झपटल कि तब झपटल। खैरियत येह छल जे दूनू क बीच मे तीन चारि टा बेंच छलैक।

अचानक पहिल फेरीवला गरजल—लियऽ लियऽ, अढ़ाइ टका क माल दू टका मे। शत्रु ई चालाकी सँ बाजार मारि कए लै जाए, ई दोसर कैं कोना सह्य हेतिहैक? ओ हो चिकरल—दू टका दू टका। पहिल क्रोधसँ थर-थर कँपैत गरजल—सवा टका, सवा टका। देखी तँ आइ अहि ठाम ई बज्जात कोना बेच

कए जाइये ! आब की छल ? अढ़ाइ टका क चीज लोग धड़ाधड़ सवा टका मे किनए लागल। झगड़ा मे रुचि रखैवला सज्जन सेहो दू टा सीसी किनलथि। एहि तरहें जखन छ सात टा सीसी बीकि गेलैक तखन दोसर फेरीवला जी साधि कए चिकरल—हम एक टका दू आना मे बेचब। पहिल फेरीवला चट्ट दए कहलकैक—तँ हम एके टका मे बेचब। हमरा जतेक टूटी कियेक ने हुए, किन्तु तोरा हम अहि ठाम एको टा नहि बेचे देबौ। दोसर फेरीवला बेचारा गुम पड़ि गेल। एमहर फेर एक बेर ओकर सीसी धड़ाधड़ बिकए लागलैक। ओ रुचि राखए वला सज्जन पुनः चारिटा सीसी क माँग कैलन्हि। लेकिन एहि तरहें नोकसान उठा कए ओ फेरीवला एके आदमी कैं सात-आठ सीसी देवाक लेल तैयार नहि छल। एक किनवा पर तुलल, दोसर कोनो तरहें एके आदमी क हाथ मे सब माल बेचबा लेल तैयार नहि। ई हुज्जति देखि हमरे बेंच पर बैसल एक देहाती परिवार तड़ दए चारि सीसी लए लेलक। अपन बेंच पर क एक लोक कैं ओ झगड़ा मे रुचि राखयवला आदमी बुझा रहल छल जे सियालदह टीसन पर पहुंचैत देरी ओ सीसी सभ दू टका मे बीकि जाइत।

एही समय हमर गाड़ी दमदम जंकशन पर रुकल। दूनू फेरीवला उतरि गेल। फेर जहिना गाड़ी ससरए लागल कि ओ सह देनिहार आदमी सेहो धड़फड़ा कए चलतीये गाड़ी सँ उतरि गेल। हमरा किछु कुतूहल आ' सन्देह सेहो भेल। हम एक कात मे छलहुं। गरदनि निकालि कए खिड़की बाटें देखतहि आश्चर्य चकित भए गेलहुं।

देखी तँ वेह तीनू आदमी एक दोसर केर कान्ह पर हाथ रखने प्लेटफार्म पर ठाढ़ छथि और अपन सफल अभिनय पर हँसैत हँसैत लोटपोट भए रहल छथि।

तेतरी

श्री देवनारायण झा

बैसाख मास ! आन सालक अपेक्षा अहि साल गर्मी किछ विशेष पड़ैत छलैक । सूर्य्य लुक-झुक लुक-झुक कए रहल छलाह चरवाह सब अनेर माल जाल कें बटोरि ग्राम दिशि चलल छल । चिड़ै-चुनमुनी-धड़फड़ायल अप्पन अप्पन खोता दिशि ओही रूपें भागल जा रहल छल जेना कोनो परदेशी नीक अर्थोपार्जन कए बहुत दिन क बाद गाम जा रहल हो । गाम सँ उत्तर मुसहर टोली छलैक । ओही टोलक सभसँ पश्चिम एक लड़कल छोट छीन घर, घर नहि बल्कि ओकरा खोपड़ी कहल जाय त बढ़ियाँ । ओहि घर मे निच्चे मे एक फाटल छीटल पटिया पर एक ११-१२ वर्ष क नेना लागि क आक्रमण सँ उधकि रहल छल । ओकर बहिन जे ओकरा हेतु एक मात्र सम्बल छलैक अप्पन देह क भार दए जतने छलैक । किछु कालक उपरान्त जखन लागिक हुहुऐनाइ कम भेलैक त नेना नीचा सँ बाजि उठल "गे किछुओ हउ न खाय के खातिर ? भूख सँ अतरी ऐठले जा रहल छै ।"

ई सुनि तेतरी क आँखि नोर सँ ढबढबा गेलैक । मनेमन कहय लागल—केहन है अइ नगरी क लोक सब ? केओ एक चुटकी ने देलक । आइ चौ चन्नो मे उपास ! हम त कोनो नती सहियो जाएब, लेकिन भुखना कोना बेराम भए......... ?

'कुछो न हऊ ?' पुनः भुखना पुछलकैक । "नै रे ! कोइ ने देलक । सौंसे गाम बउआ अइली ग"—ई कहि तेतरी हवो ढकार

भए कानय लागल । "देव बाबू ओइजग माड़ो न मिललऊ ? उहो पी कए रहि जैती ।" "रे नै ! देव बाबू कहलखीन्ह ग जे बड़द के पिआएव ।" थोड़े काल धरि दूनू उदास छल। फेर तेतरी बिदा भेल गाम दिशि कैं ।

"कहां चलले फेनो ?" भुखना टोकलकैक ओकरा । "जाइ छिकी बउकू बाबू ओइ जग, कुछो दे देतन"। चौकठि लग सँ ओ उत्तर देलकै ।

बउकू बाबू भीतरी दलान मे एकसर बैसल छलाह। घर मे छोटगर एक बालक आर दस वर्ष क कन्या। स्त्री एहि साल गत भए गेल छलखिन्ह। तावत् बेकल झा पहुँचलाह। पहुंचति देरी कहैत छथिन–गोर लगैत छी बउकू भाइ ?

"आनन्द रहह ! तोरे हम तकैत छलौंह। भांग छानवाक व्यवस्था करह।"

"मालिक" बाहर सँ एक क्षीण आवाज सुनै मे एलन्हि । मूड़ी उठा कए देखलन्हि, तेतरी ठाढ भेल अछि दलान क बाहर मे। कहलथीन्ह–फरके·ठाढ़ रहय, भांग पीसल जाइत अछि। ओ ओरिआनी सँ अओरो हटि कए ठाढ भए गेल–कहीं छूति ने भए जाइ। गहिकी नजरि सँ बउकू बाबू देखलथीन्ह–मैल फाटल नुआ, देह झांपवा मे असमर्थ, झवड़ल माथ, पातर ठोर फाटल, सतरह अठारह क वयस, आंखिमे दीनताक कालिमा–बेजाए नै लगलन्हि बउकू बाबू के। "थम्हिहें ! भांग पीबि लैत छी त कहिहें।" बउकू बाबू जोर सँ बाजि उठलाह।

भांग छनल। दूनू व्यक्ति भरि भरि छाक पीलैन्हि। बेकल झा लोटा लए जलाश्रय दिशि गेलाह। बउकू बाबू बाहर आबि

पूछलथिन्ह—"कि छौह ?" भरल कण्ठ तेतरी बाजल—"मालिक, आइ दिन भरि कुछ न खइली ह ! भाइ बेराम हए।" इ कहैत कहैत ओकर कण्ठ बाभि गेलैक ।

आश्वासन क स्वरे कहलथीन्ह—"कान जूनि ! अंगना आ ! तेतरी अंगना गेल। बउकू भा घर सँ सेर पांचेक चाउर आनि ओकर फाटल खोंइछा मे देलथीन्ह। फेर एकटा अठन्नी सेहो डांड़ सँ बाहर कए देलथिन्ह। कँचा तरहत्थी पर दैत काल जोर सं आँखिक इशारा कैलथीन्ह। तेतरी चकित भए गेल; मोन मे भेलै जे चाउर उभील दी, अठन्नी हिनका मुँह पर फेंक दी आर पड़ाइ । मुदा पड़ाइत कत ? ओ नै कोना कहितै ? ओकरा भाइ कें सहय जे पड़तै। दम सधने ठाढ़ि भेल रहल ।

जाइत काल बउकू बाबू एक खण्ड साड़ी दैत कहलथीन्ह—"जखन जे खगता हउ से ल' जइहें।"

तेतरी उत्तर नहि दए मुँह नीचा कएने चुपचाप अपन घर दिशि बिदा भए गेल ।

घर पहुंचि गेल। भाय पपीहा जकाँ बहिनीक बाट ताकि रहल छलैक। चाउर, नुआ तथा अठन्नी देखि ओकरा जेना सब दुःख छूटि गेलै। जोर सँ वाजि उठल, "आब नहि मरबै। ई सब कोन बाबू देलखन हँ ?

बउकू बाबू देलन्हि—बहिन कहलकए।

केहन दया छैन्हि गरीब पर—भाय बाजल।

बहिनक मुख सँ "हँ" शब्द बहरायल, किन्तु एहि दानक प्राप्ति मे एकरा की मूल्य चुकावय पड़लैक से अन्तर्यामीए जानता।
